शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

डॉ. ज्योति बाला
संस्कृत अध्यापिका
राजकीय कन्या विद्यालय
पाल्हावास, हरियाणा, भारत

शोध संक्षेप

स्त्री विमर्श साहित्य के रूप में देखें तो साहित्य मानव चेतना की अभिव्यक्ति करता है। प्रेमचंद युग को मूल्यों का वैविध्य वाला युग भी कहा जा सकता है। इस युग में कहानी अपनी शैशवावस्था पार करके अपने यौवन के दहलीज पर दस्तक देने लगी थी। प्रेमचंद ने न केवल राष्ट्रीय समस्याओं बल्कि एक सामान्य वर्ग की निजी समस्याओं को अपनी कहानियो द्वारा प्रस्तुत किया प्रेमचन्द ने अनेक ऐसे नारी पात्रों की रचना की है जो विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों से भी पर्याप्त आगे जा निकले हैं।

भूमिका

बीसवीं सदी का आरंभिक चरण 'न स्त्री स्वंतंत्रम अर्हति' के मनुवाक्य तथा 'नारी नर सम होही 'के बीच मुक्ति हेतु संघर्ष रत भारतीय स्त्री एवम समाज के कशमकश से भरा है। यह वह समय है जब भारतीय समाज में दो स्तरों पर मुक्ति का संघर्ष चल रहा था एक तरफ अंग्रेजी पराधीनता से देश की मुक्ति हेतु स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी जारही थी तो दूसरी तरफ पितृसत्तात्मक भारतीय समाज में दोयम दरजे का जीवन जी रही स्त्री अपनी मुक्ति एवम पहचान हेतु संघर्ष रत थी। 19 वी सदी के आखिरी दशकों में सुधारवादियों द्वारा स्त्री मुक्ति की दिशा में किये गए सतत प्रयासों ने स्त्री चेतना के विकास हेतु उपयुक्त जमीन तैयार की।

समाज सुधार आंदोलन, स्वतंत्रता संग्राम में स्त्रियों की भूमिका तथा आगे चल कर स्वयं स्त्रियों द्वारा स्त्री मुक्ति आंदोलन का नेतृत्व सम्भालने के फलस्वरूप स्त्रियों की भूमिका में परिवर्तन आना स्वाभाविक था अर्थात बीसवीं शताब्दी तक आते-आते स्त्रियों तत्कालीन समाज में नारी मुक्ति के प्रश्न पर सामाजिक व वर्गीय संस्कारों से उपजे अंतर्विरोध तत्कालीन राष्ट्रीय नेताओं तथा सुधारकों का एक उल्लेखनीय व सुखद पहलू है। स्त्री की सामाजिक भूमिका केवल गृहस्थी के कामकाज तथा घर की चारदीवारी तक ही सीमित नहीं रह गई थी, बल्कि वह बाहरी कार्यों में भी हाथ बंटाने लगी थी।

स्वतंत्रता तथा उसके अधिकारों को लेकर उस समय के विचारकों में अनेक विरोधी विचार देखने को मिलते हैं। स्त्री की सामाजिक व राजनीतिक भूमिका के विषय में काफी अंतर्विरोध मुक्त चिंतन समाज में चल रहा था। स्त्रियों की स्वतन्त्रता व समानता के अधिकारों का दायरा क्या हो, जैसे तमाम प्रश्न भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हर आम भारतीय के बीच बार-बार उठाये जाते रहे।

भारतीय समाज का रूप निरंतर बदल रहा था और सामाजिक प्रक्रियाऐं व्यक्ति को प्रभावित कर रही थी। साहित्य में भी परिस्थितियों के अनुसार

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बदलाव हो रहा था। उपन्यास एवं कहानियों के माध्यम से नारी चेतना एवं नारी स्वतंत्रता की बातें हो रही थी। उस समय स्त्रियों की दशा अच्छी न थी। मध्यम व निम्न वर्ग की स्त्रियों को अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी और वह अपने अधिकारों से वंचित थी। जमींदार, महाजन आदि परिवार की स्त्रियां घरेलू कार्यों तक सीमित थी, जबकि काश्तकार आदि वर्ग की स्त्रियां घरेलू कार्यों के साथ-साथ खेतों में भी काम करती करती थी। मध्यम वर्ग के परिवारों में नारी -शिक्षा को महत्व नहीं दिया जाता था। ऐसे समय में प्रेमचंद ने नारी समस्या को मुख्य विषय बनाया तथा अपने उपन्यास एवं कहांनियों के माध्यम से नारी की दुर्दशा को उजागर किया, जो हिंदी साहित्य को दी हुई अपूर्व देन है। सन 1916-45 के काल को प्रेमचंद युग कहा जाता है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

प्रेमचंद ने कहा है - नारी की उन्नति के बिना समाज का विकास संभव नहीं है, उसे समाज में पूरा आदर दिया जाना चाहिए तभी समाज उन्नति करेगा। प्रेमचंद की नारी भावना ने साहित्य में एक युगांतर प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद अतीत की ओर दृष्टिपात करते हुए सोचते हैं- "जब तक साहित्य का काम केवल मन बहलाव का सामान जुटाना, लोरियाँ गा-गा कर सुनाना, आंसू बहांकर जी हल्का करना था, तब तक उसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा है, जिसमें उच्च चिंतन हो, जो हममें गति और बैचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं क्योंकि सोना मृत्यु का लक्षण है'।"1

प्रेमचंद ने नारी वर्ग की जिन समस्याओं पर प्रकाश डाला है। वे अधिकांशतः मध्यम वर्ग की नारियों की अपनी ही समस्यांऐ हैं। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों सेवासदन, निर्मला, गोदान आदि के माध्यम से मध्यम वर्ग की दुविधा भरी परिस्थिति का चित्रण किया है। मध्यम वर्ग की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि वह बौद्धिक विकास की दृष्टि से उच्च वर्ग के तुल्य होता है, किन्तु आर्थिक अभाव के कारण उसका जीवन विकसित नहीं हो पाता। परिणामतः वह असन्तोष और घुटन का अनुभव करता रहता है। आर्थिक अभाव और मर्यादा पालन से उत्पन्न अनेक प्रकार की कुरीतियों ने जिस रूप में इस वर्ग के नर नारियों को संतप्त किया है, उसका वर्णन प्रेमचंद के अधिकांश साहित्य में उपलब्ध हो जाता है। डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत के अनुसार, "प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में दलित मानवता तथा नारियों के प्रति सहानुभूति का भाव प्रदर्शित किया है, इनका आदर्शवाद इनकी इसी सहानुभूति का परिणाम है।"2

मनोवैज्ञानिक आधार लेकर चलने वाला उनका साहित्य हिंदी साहित्य के चरम सौंदर्य को प्रदर्शित करता है। इस दृष्टि से प्रेमचंद की टक्कर का कलाकार आज तक नहीं जन्मा है। विद्यानिवास मिश्र ने स्मृति लेख की भूमिका में लिखा है, "प्रेमचंद की स्मृति-लेख में नैतिक यथार्थवाद की जो अवधारणा रेखांकित की है, वह बहुत प्रासंगिक होते हुई भी अत्यंत अपेक्षित है।"3 सच ही है इनके साहित्य में जहाँ एक ओर युग का सच्चा चित्रण हुआ है, वहीं दूसरी और प्रेम, सहानुभूति, तपस्या, सेवा आदि मूल्यों का जोरदार समर्थन उनमें है। स्त्री जीवन में आने वाले कष्टों को सहकर वह मैले कुचेले, पुराने वस्त्र पहनकर, आभूषण विहीन होकर, आधे पेट सूखी रोटी खाकर, झोंपड़े में रहकर, मेहनत मजदूरी कर, सब कष्टों को सहकर भी आनंद से जीवन बिताती है, परन्तु तभी जब उसे समाज में

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आदर प्राप्त हो, परिवार में प्रतिष्ठा हो। प्रेमचंद ने अनुभव किया है कि नारी धन की नहीं बल्कि प्रेम की भूखी है, इसलिए वे प्रेम के अभाव में आजन्म कुवांरी रहने की कल्पना भी कर लेती है।

निर्मला की निर्मला, सेवासदन की सुमन, कायाकल्प की मनोरमा, कर्मभूमि की सुखदा, नैना तथा गोदान की ----------, आदि नारी पात्र प्रभूत रत्न राशि होते हुए भी पति के स्नेह के बिना निराशापूर्ण दुर्भाग्य का जीवन जीती है - प्रेमचंद की दृष्टि में पुरुष यद्यपि शक्तिमान है, फिर भी नारी के आगे वह दया के पात्र है और वह नारियों को आदेश देते है, "तुम लोग उन पर क्रोध मत करो, जिसे तुमने पैदा किया वह तुम्हारे हाथ से कैसे खराब हो सकते हैं ?"4. नारी में दिव्य गुणों की स्थापना के लिए प्रेमचंद उसे पूर्ण शिक्षित करना चाहते थे। वे शिक्षा के साथ-साथ क़ानूनी अधिकार भी स्त्री को दिलाना चाहते हैं। प्रेमचंद ने नारी जीवन के विकास के लिए प्रमुख रूप से जिन दो चीजों को प्रमुखता प्रदान की है, उनमें दूसरा स्थान उसके अधिकारों का ही है। प्रेमचंद का मानना था, ''स्त्री का पूर्ण विकास तभी सम्भव है ,जब उसे पुरुषवत सारे अधिकार प्राप्त हों।"5.कानूनी अधिकारों के बिना पुरुष समाज उसे ठगता जाएगा। 'गोदान' में नगर की नई नारी के उत्थान में विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं ने जो-जो कार्य किए उसके लिए प्रेमचंद हृदय से आभारी हैं, इन्होने माना है -"मैं तो धन्यवाद देता हूँ दयानंद को, इन्होने आर्य-समाज का प्रचार करके स्त्रियों और समाज का बड़ा उद्धार किया है।6

इनका साहित्य इनके समस्त युग का प्रतिनिधित्व करता है। प्रेमचंद ने एक ओर उपन्यास विधा को एक दिशा दी है साथ ही दूसरी तरफ नारी को वासना की धारणाओं से निकाल कर ऐसे प्रांगण में ला दिया है, जहां उसकी महानता के दर्शन हो सकें। प्रेमचंद स्त्री स्वतंत्रता के पूर्ण समर्थक हैं। उनका मत है कि यदि युवक तथा युवती का परस्पर शुद्ध व्यवहार हो तो सहशिक्षा से भी किसी प्रकार की हानि नहीं है। 'गबन' उपन्यास में उन्होंने एक स्थान पर सहशिक्षा के अनेक लाभ गिनाये हैं, "जहां लड़के-लड़कियां एक साथ शिक्षा पातें हैं, वहां जाति-भेद बहुत महत्व की वस्तु नहीं रह जाता है।"7.अर्थात यह मानना चाहिए कि जब पुरुष और स्त्री का आपस में स्नेह और सहानुभूति हो तो कामुकता का अंश थोड़ा ही रह जाता है। वैसे भी कामुकता विषयक पवित्रता को ही स्त्री के आधार की एकमात्र कसौटी नहीं माननी चाहिए और भी अनेक ऐसे गुण हैं, जिन्हें प्राप्त कर वह महान बन सकती है। स्त्री और पुरुष दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। स्त्री के अभाव में पुरुष और पुरुष के अभाव में स्त्री की दुर्गति मानते हैं। 'गोदान' में भोला पत्नी के अभावजन्य कष्टों के अनुभव के बाद ही होरी से कहता है, "मेरा तो घर उजड़ गया, यहां तो एक लोटा पानी देने वाला भी नहीं है।"8. प्रेमचंद पत्नी की महत्ता को स्वीकार करते हैं, क्योंकि एक के अभाव में जीवन का अलौकिक आनंद नहीं मिल सकता है। 'गबन 'में पंडित इंद्रभूषण की मृत्यु के पश्चात उनके भतीजे मणिभूषण ने उनके रूपये-पैसे अपने नाम करवा लिए, बंगला बेच दिया, नौकरों की छुट्टी कर दी और बेचारी विधवा रत्न को रहने के लिए जब 11000 रुपए का मकान तय किया तो उसकी आँखे खुली और कहा, "मैं अपनी मर्यादा की रक्षा स्वयं कर सकती हूँ, तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नहीं है।"9 इसलिए प्रेमचंद स्त्री को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक होने

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

को कहते हैं, क्योंकि अधिकारहीन स्त्री के प्रति प्रेमचंद पर्याप्त दयावान हैं। वे कहते हैं- जब स्त्री शिक्षित होगी तभी उसे अपने अधिकारों के बारे में जानकारी मिलेगी। संस्था विमेंसलीग में प्रो. मेहता से प्रेमचंद ने जो भाषण दिलवाया है, उसमें भी उन्होंने पुरुष से अधिक स्त्री शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया है, "मैं नहीं कहता देवियों को विद्या की जरूरत नहीं है, है पुरुषों से अधिक।"10 प्रेमचंद की नारी को जीवन की चरम शांति भारतीय आदर्शों में ही मिली है। प्रेमचंद के उपन्यास, कहानी की वे पात्राएं जो आधुनिक थोथी सभ्यता के आकर्षण में फंस कर, फैशनेबुल बनी, उसका दुखद अंत भी प्रेमचंद ने दिखाया है। अगर ऐसा नहीं हो पाया है तो उस पात्र से प्रायश्चित कराकर तप, त्याग, दान, सेवा, सादगी, सहानुभूति, विनम्रता आदि भारतीय भावों में उसे ढाल कर उसका उत्थान किया गया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार प्रेमचंद ने नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। प्रेमचंद नारी को प्रेम की शक्ति का रूप मानते हैं। वे नारी के अंदर सेवा, त्याग, बलिदान, प्रगतिशीलता, कर्तव्य, ज्ञान और पवित्रता आदि उदार भावों को देखना चाहते हैं। उन्होंने इन्ही आठ भावों को विभिन्न नारी पात्रों में स्थान-स्थान पर चित्रित करके दिखाया है। इनका मानना है यदि नारी इन गुणों को धारण करेगी तभी वह समाज और राष्ट्र के स्वरूप विकास में सहयोग कर सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 साहित्य का उद्देश्य - प्रेमचंद पृष्ठ 57, अक्षर पीठ प्रकाशन मोहिलनगर, इलाहबाद- 6 संस्करण 1, 1972

2 बहुवचन पत्रिका, डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत, पृष्ठ 2, संस्करण 2009

3 बहुवचन पत्रिका. स्मृति लेखा, विद्यानिवास मिश्र, पृष्ठ 105 संस्करण 2009

4 प्रेमचंद घर में, शिव रानी देवी, पृष्ठ 165, सरस्वती प्रेस, बनारस संस्करण 1965

5 प्रेमचंद के नारी पात्र, ओमप्रकाश अवस्थी, पृष्ठ 73 नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली संस्करण 1959.

6. प्रेमचंद घर में, शिव रानी देवी, पृष्ठ 132, सरस्वती प्रेस, बनारस संस्करण 1965

7 गबन, प्रेमचंद पृष्ठ 103, सरस्वती प्रेस, बनारस, संस्करण1928

8 गोदान, प्रेमचंद पृष्ठ 21, सरस्वती प्रेस, बनारस, संस्करण 1936

9 गबन, प्रेमचंद, पृष्ठ 262, सरस्वती प्रेस, बनारस, संस्करण1928

10 गोदान, प्रेमचंद पृष्ठ 169, सरस्वती प्रेस, बनारस, संस्करण 1936